Item Code: 642 Participant Code: 038

विषय - मैं कौन हूँ ?

कहानीयों के आखरी पन्ना

शाहरी वातावरण में रात अपने ही माहोल के साथ आ रही है। सूरज का आखरी रोशनी भी नदी में कूदा और चंदा मामा को जगह दिया। दिन के नीले साड़ी में रात काली रंग गिरादी। फिर उसने कोहिनूर से ज्यादा चमकने वाले तारों से साड़ी को सजा दिया। रात के इस सन्नाटे में वृक्षों के पत्ते हवा के साथ एक धीमी आवाज़ बजा रहे हैं। रात के इस शरारतों को दादाजी धोर से देख रहे हैं। उस छोटे घर के एक कोने से दादाजी अपने कुर्सी में बैठे अपने पोती को पास रखे उसे सुला रहा है। हजारों कहानी सुनके भी पोती, छोटू का मन नहीं भरा। "दादाजी, एक और कहानी। प्लीज़..." - छोटू ने कही। दादाजी जवाब दी, "छोटू, तुम्हारी माँ अब आएगी। हमें डाँट पड़ेगा। तुम जल्दी जाकर सो जाओ। कल स्कूल जाना है ना?"। पर छोटू

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തീയതി.....................
★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

तो नहीं माना। उसने कहा, "सिर्फ एक और कहानी। वरणा मैं आपसे कभी भी बात नहीं करूँगी!" दादाजी कहा "सिर्फ एक और कहानी। फिर झट से सो जाना। पक्का?"। छोटू कहा, "पक्का"। जब दादाजी कहानी सुनाना शुरू कर दिया तभ ही रेणु, अपने बेटा सुधी की पत्नी आ गया। "छोटू! मैं तुमसे सोने को कहा था ना? तुम यहाँ इस बूढ़े आदमी की बकवाज़ सुन रहे हो? उठो! फोरन!!" — रेणु चीखा। दादाजी चौंका नहीं, क्योंकि यहीं तो हर दिन यहाँ चलता है। छोटू उदासी से दादाजी को गला लगाकर सोने गया। रेणु नफ़रत के साथ दादाजी को देखकर अंदर गया।

दादाजी ऊपर आसमान में देखा। दादाजी को दादीजी की याद आया। मानो की दादी जी दादाजी से आसमान के ज़रिए बात कर रहा हो। दादाजी आसमान से कहा, "तुम कब मुझे वहाँ ले जाएगी?"। जब तारे उसका जवाब दे रहा हो तब ही घने बादल उसका मुँह छुपा देता है। दादाजी अपने हरे बालों को हाथों से ठीक करके घर के अंदर जाता है। जब बिस्तर पर लेटने जा रहा

था तभी रेणु और सुधी के कमरे से एक आवाज़ आई। रेणु कहा, "आप और आपका एक बाप! उस बूढ़े आदमी से ~~मेरी~~ मेरी मन बिगाड़ गया।" इतना कहकर वो कमरे की लॉप ऑफ़ कर दी। दादाजी ~~भारी~~ भारी हृदय के साथ बिस्तर में लेट गया। पता नहीं उसे नींद आया या न आया उसने अपनी आँखें बंद कर दी। अपने आँसू कोई भी नहीं देखना चाहिए ~~$~~ – यही तो उनका सालों पुराना आदत है।

जब छोटू स्कूल जाता तब दादाजी उस घर में अकेला होहो जाता। उस घर में छोटू के बजाय कोई भी इनसान उनसे प्यार से एक शब्द नहीं बोलता। सुधी तो रेणु की ~~पूछ~~ पूंच है। रेणु को दादाजी से नफ़रत है। उसे ठीक से खाना भी नहीं खिलाते। पर छोटू छुपके दादाजी को खाना देता था।

अगली दिन। सूरज तो जल्दी ही बाकि काम चाँद को दिया। छोटू स्कूल से वापस आया और दादाजी को पूछा। इसी कारण उसे माँ से डाँट पड़ गई। छोटू दादाजी को ज़बरदस्ती रात

के खाने के लिए टेबल पर बैठ दिया। रेणु ने बिना मन के उन्हें एक छोटी रोटी दिया। और सब खाने बैठ गए। रेणु ने खाना नया खरीदा महंगे बर्तन पर रखा। सब खाना शुरू कर दिया। भूख के मारे दादाजी जल्दी ही उस छोटे रोटी को खाया। "क्या मुझे एक और रोटी मिलेगा क्या?" - दादा पूछा। "अपने - आप ले लो!" - रेणु घुस्से से कहा। दादाजी रोटी लेते वक्त बर्तन हाथ से फिसलकर नीचे गिर गया। बर्तन टूट गया। रेणु घुस्से से लाल हो गया। उसने सुधी से कहा, "देखा अपने पापा को! सब गिरा दिया!!"। उसने दादाजी से कहा - "क्या आपका दूसरा बेटा रामू यह साफ़ करने आएगा क्या? पता नहीं क्या समझ रखा है अपने आप को!"। दादाजी चुपचाप बैठा। उनका आँखें धुंधुलाया। रेणु कहा, "प्रोपर्टी का बड़ा हिस्सा रामू को और छोटा हिस्सा सुधी को। कैसा बाप है आप? तो फिर रामू के साथ रहो! हमें क्यों परेशान कर रखा है?। छोटु डरकर अपने कमरे में गयी। सुधी कुछ भी नहीं कहा। दादाजी धीमी आवाज़ में कहा, "पर बेटी, रामू तो विदेश में

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തിയ്യതി................... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

है ना? मैं वहाँ कैसे?" दादाजी का आवाज बीच में टूट गया। रेणु कहा, "तो भावना करे की हम भी विदेश में है। हमें छोड़ दीजिए।" यह कहकर बिजली की तेज़ी में वो गया। दादाजी को एक झटका लगा। उनका हृदय कांप उठा। उनके दिल में एक सुई खुस गया और उसके कोने से खून बह गया। दादाजी धीरे-धीरे कुर्सी से उठकर कमरे में गया। रेणु की कमरे से आवाज़ आ रही है। "सुधी मुझे कुछ भी नहीं जानना। इस बूढ़े को इस घर से कल ही निकालना है।" - रेणु कहा। सुधी ने कहा, "पर कहाँ? आश्रम में बेचू तो वह शर्म की बात है।" रेणु कहा - "तो किसी मंदिर में छोड़ दो।" सुधी - "तुम क्या कहे, मैं जो करूँगा। तो कल ही उन्हें मंदिर छोड़ते है।" रेणु कहा, "कल ही करना है।" दादाजी सब सुना। उनका टूटा हुआ हृदय फिर एक और बार टूट गया। उनके आँखों से आँसू की धारा बह गयी। वह दिल में कहा, "जिनके लिए मैं जिया था, उनको अब मेरा उपेक्षा करना है। भगवान मेरे बच्चों का खयाल रखना।" उन्होंने आँख बंद कर दी।

अगला दिन। सुबह ही रेणु कमरे में आया। दादाजी को नींद से जगाकर कहा, "पापा माफ़ कर दीजिए। कल मुझे ऐसा कहना नहीं चाहिए था।" दादाजी कहा, "कोई बात नहीं। वह तो मैं तब ही भूल गया।" दादाजी झूट बोला। रेणु के बातें अभी भी उन मासूम कानों पर दोहराता है। रेणु — "पापा, चलो मंदिर चलते हैं। कई दिन हो गए बाहर निकले। सुधी ~~का~~ और छोटू को भी आज छुट्टी है। जल्दी तैयार रहना।" दादाजी "हाँ" कहा। रेणु कमरे से गया। दादाजी को पहले ही पता है क्या होने वाले है। पर भविष्य को कभी रोका नहीं जा सकता। उन्होंने जल्दी ही तैयार हुआ। सब गाड़ी में बैठ ~~गए~~ गए। दादाजी छोटू को गले से लगाकर चूमा। यह देखकर रेणु को गुस्सा आ रहा था पर वो नहीं दिखाया। ~~मंदिर~~

मंदिर पहुँच गया। बहुत भीड़ था। "भीड़ में तुम गुम हो जाओगे। मेरा हाथ पकड़ो।" — रेणु छोटू से कहा। दादाजी का हाथ पकड़ने तो कोई भी नहीं है। मंदिर में घुस गया। थोड़ी देर बात दादाजी अपने आस-पास देखा। ~~का~~ अपने परिवार को नहीं देख रहा। दादाजी को बहुत दुःख आया। उनको

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി .... ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

आँसू रोका नहीं जा सका। भीड़ के बीच रोते-रोते दादाजी कहा, "सुधी... रेणु, छोटू....."। पर कोई भी नहीं सुना। दादाजी लोगों से पुछा, "क्या, आप मेरे बेटे को देखा है?"। पर लोग समझ रखा था कि वो पागल है। उनके स्थिति देखकर लोग दया किया। कोई भी ~~नहीं~~ उनका मदद नहीं किया। आखिर में सुधी को दादाजी दूर से देखा। दादाजी फटाफट सुधी के दिशा में अपने भारी पैरों को खींचकर दौड़ा। भीड़ के बीच सुधी और परिवार फस गया था। इसलिए परिवार का भागना मुश्किल था। ~~~~ जब दादाजी पास आया तब उन्होंने जानभुजकर पूछा, "कहाँ ~~~~ गए ~~~~ थे तुम लोग? मैं तो डर गया था। चलो घर जाता है। मुझे आराम की जरूरत है।" दादाजी को सच पता था कि वो उनका उपेक्षा किया है। पर प्रतीक्षे के साथ उन्होंने पुछा। तब सुधी कहा, "क्या कह रहे हो? आप कौन है?"। दादाजी स्तंभ ~~~~ हो गया। उन्होंने दुःख भरी आवाज़ में कहा, "मैं कौन हूँ? क्या तुझे नहीं पता कि मैं कौन हूँ? तुम्हारे पिता।" रेणु ने कहा, "क्या बकवाज़ कह रहे हो बूढ़े आदमी! हट जाओ रास्ते से!"

दादाजी को रास्ते से हटाकर उन लोग चलना शुरु ~~किया~~ किया। ~~अब~~ छोटू चिल्लाया, "दादाजी। माँ दादाजी रह गया..."। रेणू छोटू का मुँह पकड़कर चला। उन लोग चल नहीं रहा था। दौड़ रहा था। दादाजी अपने भारी पैरों से उनका पीछा करने का कोशिश ~~किया~~ किया। पर हार गया। दादाजी मंदिर के एक कोने में रुका।

दादाजी ~~कि~~का मन अतीत में जा अटकी। "पापा... पापा..." कहकर दौड़ने वाला अपना ~~के~~ बेटे, "दादाजी..." कहकर कहानी सुनने आनेवाली छोटू, उसके साथ की हँसी मजाक, जीवन में अपने बच्चों के लिए किए गए त्याग... सब उनके मन में आया। भारी मन से दादाजी मंदिर के नंगे फर्श पर बैठ गया। अपने आँखों से आ रही आँसू के धारा को अपने हाथ से पोंछ दिया। फिर आँखें बंद की। अपने ~~प~~ बेटे सुधी की, रेणू की, छोटू की आवाज़ उनके कान में दोहराया। दादाजी अपने आखरी नींद में खुस गए। अब दादाजी दादी की साथ है। इस संवेदनहीन दुनिया दादाजी को मार दिया। कहानियों के आखरी पन्ने को भी उन लोग फाड़ दिया।